भारतीय दर्शन विषयक वक्तव्य 02

दर्शन परिचय

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स द्वितीय वर्षीय छात्रों के तृतीय पत्र की 'ग' अन्विति के लिए। भारतीय दर्शन के बारे में विभिन्न पुस्तकों से विद्यार्थियों के अध्ययनार्थ पाठ्य सामग्री संकलन)

पाठ्य संकलनकर्त्ता : डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

भारत का दार्शनिक केवल तत्व की बौद्धिक व्याख्या से ही सन्तुष्ट नहीं होता है बल्कि तत्व की अनुभूति प्राप्त करना चाहता है। भारतीय दर्शन में अनुभूतियाँ दो प्रकार की मानी गयी हैं-

(१) ऐन्द्रिय (२) अनैन्द्रिय या आध्यात्मिक ।

आध्यात्मिक अनुभूति बौद्धिक ज्ञान से उच्च है। बौद्धिक ज्ञान में ज्ञाता और ज्ञेय में भेद वर्तमान रहता है परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान में ज्ञाता और ज्ञेय का भेद नष्ट हो जाता है।

पश्चिम की Philosophy केवल इन्द्रियानुभूत विषयों पर आधारित तार्किक ज्ञान है एवं भेदयुक्त सत्ता तक सीमित है। जबकि दर्शन इन्द्रियानुभूत विषयों के साथ अभेदात्मक सत्ता से जुड़ा है।

वर्तमान विज्ञान प्राचीन भारतीय ज्ञान के समकक्ष है। जबकि भारतीय विज्ञान वर्तमान विज्ञान से भी उच्च कोटि का है, जिसमें 'एकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं'[5] की अवधारणा है।

गीता में कहा गया है-

'नहि ज्ञान सदृशं पवित्रं इह विद्यते'(गीता४/३७)

'ज्ञानविज्ञान तृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः'(गीता६/८)

'ज्ञानविज्ञान सहितं'(गीता९/१)

विज्ञान का अर्थ है तत्व का आनुभविक ज्ञान-

तापाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।

अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहं अर्जुन ॥ गीता९/१९॥

निष्कर्षत: हम दर्शन को ज्ञानविज्ञान का संयुक्त रूप मान सकते हैं। चार्वाक, बौद्ध, वेदान्तादि दर्शन ज्ञानविज्ञान के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

१.भारतीय दर्शन, डा.शोभा निगम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८

[5] छान्दोग्योपनिषद्, अध्याय-६, श्लोक-४,५

२.हिन्दी सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी.

३.न्यायदर्शनम्, श्री नारायण मिश्र, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी,२००७.

४.अष्टोत्तरशतोपनिषद्, श्री वसुदेव लक्षमण, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी,२००२.

५.भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो.हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, २००7